SEMESTER - 3

CC- 11

South Asia 1950 Onwards

- **Unit -4 : Globalization and its impact on women and society**

  Part-2

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

वैश्वीकरण और उसका प्रभाव :

*संस्कृति का पुनरुथान (Revival of culture) :

- वैश्वीकरण से सिर्फ भारत ने ही विश्व की संस्कृतियों को नहीं अपनाया बल्कि हमारे देश की संस्कृतियों को भी विदेशों में अपनाया गया। देश के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग का पनुरूद्धार हुआ। यह रविशंकर के "आर्ट ऑफ़ लिविंग" कार्यक्रम की लोकप्रियता,सम्पूर्ण विश्व में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन आदि से परिलक्षित होता है।

- भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी आयुर्वेदिक दवाओं के प्रयोग में वृद्धि हुई।

- अन्य देशों के साथ अंतःक्रिया से अनिश्चितता में हुई वृद्धि के कारण धार्मिक भावनाओं का पुनरुथान हुआ है। यह धर्म का उपयोग कर मतदाताओं को आकर्षित करने या धर्म के आधार पर लोगों को संगठित करने के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

- वैश्विक बाजार में चिकनकारी और बांधनी जैसे स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों की बढ़ती मांग।

- वैश्विक पर्यटन में वृद्धि के कारण स्थानीय लोग अपनी विविधता को संरक्षित करने और अपनी परम्पराओं को पुनर्जीवित करने के प्रयास कर रहे है।

इन सभी के परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। हालाँकि इनमे से अधिकांश परिवर्तन फ़िलहाल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है,किन्तु अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी इनमे तेजी से वृद्धि हो रही है। आज कल साफ़ तौर पर देखा जा सकता है कि कैसे पश्चिमी संस्कृति द्वारा भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया जा रहा है,किन्तु वह इसे प्रतिस्थापित नहीं कर रही है। वस्तुतः दोनों संस्कृतियों के मिश्रण की प्रवृति देखी जा सकती है।

भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव :(Impact of Globalization on Women in India)-----

वैश्वीकरण विभिन्न स्थानों पर महिलाओं के विभिन्न समूहों को भिन्न-भिन्न तरीकों से प्रभावित करता है। एक ओर तो यह महिलाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न कर सकता है ताकि वे आर्थिक और सामाजिक प्रगति बन सकें वहीं दूसरी ओर यह असेम्बली लाइन उत्पादन के रूप में उत्पादकों को सस्ता विकल्प प्रदान कर रोजगार के अवसरों को काम भी कर सकता है। वैश्विक संचार नेटवर्क और विविध संस्कृतियों के बीच होने वाले संस्कृतियों के मध्य होने वाले सांस्कृतिक विनिमय के उदय के साथ महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है। वास्तव में वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए समानता के विचारों और मानदंडों को प्रोत्साहित किया है जिससे जागरूकता में वृद्धि हुई है। साथ ही समान अधिकारों तथा अवसरों के लिए महिलाओं के संघर्ष में इसने उत्प्रेरक का कार्य किया है।

हालाँकि वैश्वीकरण किसी पितृसत्तात्मक समाज में नैतिक असमानता को बढ़ा सकता है। आर्थिक क्षेत्र में यह अनौपचारिक श्रम क्षेत्र में महिलाओं को और भी हाशिये पर पंहुचा सकता है। यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट फण्ड फॉर रिपोर्ट के अनुसार,विगत दो दशकों में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने देशों के भीतर तथा उनके मध्य असमानता को बढ़ाने में योगदान दिया है।

* वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव :

- वैश्वीकरण के कारण व्यापक संचार लाइन खुली है तथा विभिन्न कंपनियों के साथ साथ विभिन्न विश्वव्यापी संगठनों का भी भारत में प्रवेश हुआ है। ये सभी कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा बन रहीं महिलाओं के लिए और अधिक अवसर प्रदान कर रहे हैं।

- महिलाओं के लिए बढ़ती नौकरियां उनको उच्च वेतन के अवसर उपलब्ध कराती है। अच्छा वेतन उनके आत्मविश्वास में वृद्धि करने के साथ ही उन्हें स्वतंत्रता प्रदान करता है।

- नगरीकरण के दर में वृद्धि हुई है। शहरी क्षेत्रों में महिलाएं अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो गई हैं।

- निचले मध्यम वर्ग के पारिवारिक संबंधों के तरीके में बदलाव आया है। परम्परागत रूप से महिला घर पर घरेलु आवश्यकताओं और बच्चों की देखभाल करती रही है। अब अधिकांश महिलाएं आजीविका के लिए अपने घरों से बाहर निकल रही हैं।

- वैश्वीकरण के कारण भारत में नारीवादी आंदोलन का विस्तार हुआ है। इसने महिलाओं को उनके विचारों के प्रति अधिक मुखर बना दिया है।

- वैश्वीकरण के कारण महिला शिक्षा में वृद्धि हुई है। साथ ही स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में सुधार हुआ है जिससे मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में कमी आई है।

- विश्व भर के विभिन्न गैर-लाभकारी संगठन भारत में ही स्थापित हुए हैं। इन संगठनो द्वारा महिलाओं को उनकी उन्नति के लिए आवश्यक साक्षरता और व्यवसायिक दक्षता जैसे कौशल प्रदान किये गए हैं।

- इससे महिलाओं की स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है। यह स्वतंत्रता अंतर जातीय विवाह,सिंगल मदर,लाइव इन रिलेशनशिप के दृष्टांतों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है।

- वैश्वीकरण ने ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को मीडिया तथा कई अन्य हस्तक्षेप कार्यक्रमों जैसे गैर लाभकारी संगठनो द्वारा महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि और उन्हें उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने हेतु प्रेरित करने आदि के माध्यम से प्रभावित किया है।

- महिलाओं के दृटिकोण में परिवर्तन- शहरी क्षेत्रों में पश्चमी वस्त्रों की अधिक स्वीकृति, डेटिंग का सामान्य प्रचलन,ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गर्भनिरोधक का बढ़ता उपयोग आदि इसके उदहारण हैं।

* वैश्वीकरण के नकारात्मक पहलू :

- यद्दपि महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं परन्तु वे अधिकांशतः काम वेतन की नौकरियों में संलग्गन हैं तथा कम सामाजिक सुरक्षा प्राप्त है।

- महिलाएं दोहरी जिम्मेदारी से पीड़ित हो रही हैं। विकासशील देशों में महिलाएं जब कार्यकाल का हिस्सा बनती है तो भी उनकी घरेलु जिम्मेदारियां कम नहीं होती। अतः वे दो पूर्णकालिक नौकरियां करती हैं।

- कार्यस्थल में महिलाओं का शोषण एक नए मुद्दे के रूप में उभरा है।

- वैश्वीकरण के साथ साथ भारतियों की पितृसत्तात्मक मानसिकता की हठधर्मिता भी बनी रही है। इससे महिलाओं के वस्तुकरण,महिलाओं के उत्पीड़न के लिए सोशल मीडिया के उपयोग तथा महिलाओं के विरूद्ध हिंसा आदि में वृद्धि हुई है।

- उपभोक्ताओं के रूप में महिलाओं को उपभोक्तावादी संस्कृति का सामना करना पड़ रहा है जो उनकी स्थिति को निम्नतर कर उन्हें एक वस्तु के रूप में स्थापित करती है। साथ ही उत्पादकों के रूप में कार्य सम्बन्धी शोषण और व्यावसायिक खतरों का सामना करना पड़ता है।

- इसके अतिरिक्त,वैश्वीकरण के वावजूद वैश्यावृति,दुर्व्यवहार और दहेज़ से सम्बंधित आत्महत्याओं की घटनाएं बढ़ रही हैं।